

बनारस (काशी) की लोक कला में राज-परिवार की भूमिका

डॉ. चन्द्र भूषण श्रीवास्तव

सहायक प्राध्यापक, कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार

सारांश

बनारस (काशी) की लोक कला की परंपरा एक हजार वर्षों से अधिक समय तक समृद्ध और विकसित हुई है। यह शोध पत्र काशी की लोक कला विशेषकर बाराणसी साड़ी, काष्ठ कला, चित्रकारी, संगीत, नृत्य और कालीन बुनाई में राज-परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका को विश्लेषित करता है। मुगल काल से लेकर काशी नरेश राजवंश तक, राज-संरक्षण ने इन कलाओं के विकास, संरक्षण और वैश्विक प्रसिद्धि में अमूल्य योगदान दिया है। यह अनुसंधान ऐतिहासिक साक्ष्यों और गुणात्मक विश्लेषण के माध्यम से दर्शाता है कि कैसे राज-परिवार के संरक्षण, वित्तीय सहायता और सांस्कृतिक प्रोत्साहन ने बनारस की लोक कला को विश्व-प्रसिद्ध बनाया है।

मुख्य शब्द: बनारस (काशी), लोक कला, राज-परिवार, राज-संरक्षण, बाराणसी साड़ी, सांस्कृतिक विरासत, मुगल काल, काशी नरेश, कलाकार

प्रस्तावना

बनारस (काशी) भारत की सबसे प्राचीन और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण नगरियों में से एक है। प्राचीन ग्रंथों एवं पौराणिक कथाओं में उल्लेख मिलता है कि काशी की स्थापना लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व भगवान शिव द्वारा की गई थी, जिसके कारण यह नगर धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र माना जाता है (सिंह, 2012)। गंगा के तट पर स्थित यह ऐतिहासिक नगर भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य, संगीत और शिल्प परंपराओं का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है।

काशी की कला-संपदा अत्यंत विशाल और विविध है यहाँ की प्रसिद्ध बनारसी साड़ी की बुनाई, काष्ठ कला की नक्काशी, लोक चित्रकला की परंपरा तथा शास्त्रीय एवं लोक-संगीत की बहुविध शैली-परंपराएँ इस नगर की विशिष्ट पहचान हैं (वर्मा, 2018)। इन कलाओं के संवर्धन और संरक्षण में विभिन्न कालों के राज-परिवारों तथा शासकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। विशेष रूप से मुगल सम्राट अकबर और जहाँगीर के काल में कलाकारों को संरक्षण, आर्थिक प्रोत्साहन और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई, जिसने काशी सहित उत्तर भारतीय कला परंपराओं को नई दिशा दी (मिश्रा, 2005)।

इतिहासकारों का मत है कि 18वीं सदी में काशी नरेश राजवंश ने स्थानीय कला परंपराओं को पुनर्जीवित करने और कलाकारों को संगठित संरक्षण प्रदान करने की महत्वपूर्ण पहल की। काशी नरेशों द्वारा दिया गया राज-संरक्षण न केवल कलाओं की निरंतरता सुनिश्चित करता था, बल्कि कलाकारों को सृजनात्मक स्वतंत्रता, आर्थिक सुरक्षा और व्यापक मंच भी प्रदान करता था (त्रिपाठी, 2020)। इसी संरक्षण के परिणामस्वरूप बनारस की लोक कलाएँ—जैसे रामलीला, लोक-संगीत, नृत्य तथा शिल्प विश्व-स्तर पर प्रतिष्ठित हो सकीं।

अतः यह शोध-पत्र इस बात की गंभीर पड़ताल करता है कि किस प्रकार राज-संरक्षण ने बनारस की लोक कला के विकास, संरक्षण और वैश्विक प्रसार में निर्णायक भूमिका निभाई। साथ ही यह अध्ययन यह भी समझने का प्रयास करता है कि वर्तमान संदर्भ में इन कलाओं की प्रासंगिकता किस प्रकार बनी हुई है।

अनुसंधान पद्धति

यह शोध पत्र गुणात्मक अनुसंधान विधि पर आधारित है। निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

1. प्राथमिक स्रोत: ऐतिहासिक ग्रंथ, मुगल दरबारी रिकॉर्ड, और राज-परिवारों की ऐतिहासिक दस्तावेजें।
2. द्वितीयक स्रोत: विभिन्न शोध पत्रिकाओं, विश्वविद्यालय संग्रहालयों, और सांस्कृतिक संस्थानों के द्वारा प्रकाशित सामग्री।
3. तुलनात्मक विश्लेषण: विभिन्न कालखंडों (मुगल काल, ब्रिटिश काल, स्वतंत्र भारत) में राज-संरक्षण की भूमिका की तुलना।
4. साक्षात्कार और प्रलेखन: परंपरागत कलाकार समुदायों के साथ सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानकारी।

बनारस की लोक कला परंपराएँ

1. बाराणसी साड़ी: शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना

बाराणसी साड़ी काशी की विश्व-प्रसिद्ध कला परंपरा का प्रमुख उदाहरण है, जिसका आरंभ मध्यकालीन भारत से माना जाता है (अलबीरूनी, 2001)। प्राचीन काल में रेशम केवल राजघरानों और देव-पूजा में प्रयुक्त होता था, और रेशम व्यापार सिल्क रूट के माध्यम से भारत पहुँचा (गुप्ता, 2015)।

मुगल काल में संरक्षण:

सम्राट अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में रेशम-बुनाई को अभूतपूर्व प्रोत्साहन मिला। अकबर ने साम्राज्य भर के श्रेष्ठ कारीगरों को बनारस में बसाया, जिनमें फारसी, ईरानी और मध्य एशियाई शिल्पकार भी सम्मिलित थे (मिश्रा, 2005)। इससे बाराणसी ब्रोकेड में फारसी ज्यामितीय पैटर्न, पुष्प-लताएँ और जरी-कारीगरी का अनूठा मिश्रण विकसित हुआ (सैफी, 2014)।

साड़ी की विशेषताएँ सोने-चाँदी की जरी, महीन रेशमी बुनाई, भव्य पल्लू डिज़ाइन, और जटिल जाली-काम—इन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाते हैं (वर्मा, 2018)।

2. काष्ठ कला

बनारस की काष्ठ नक्काशी का इतिहास प्राचीन है, जिसमें देव-प्रतिमाएँ, पशु-पक्षी और पौराणिक आकृतियों को कुशलता से उकेरा जाता है (सिंह, 2012)। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है और आज भी अपनी विशिष्टता बनाए हुए है (शर्मा, 2019)।

3. लोक चित्रकारी और लघु चित्रकला

काशी की लोक चित्रकारी की परंपरा उन्नीसवीं सदी से व्यवस्थित रूप से दस्तावेजित मिलती है। मंदिरों एवं घरों की दीवारों पर अंकित चित्र स्थानीय जीवन, ऋतुओं और पौराणिक कथाओं को अभिव्यक्ति देते हैं (वर्मा, 2018)। लघु चित्रकला विशेषकर पारंपरिक मिनिएचर के विकास में भी काशी का महत्वपूर्ण योगदान है (त्रिपाठी, 2020)।



चित्र 1: वाराणसी घाटों का एक जीवंत ऐक्रेलिक चित्र, जिसमें दैनिक जीवन, आध्यात्मिक वातावरण और स्थानीय वन्यजीवन को दर्शाया गया है।

चित्र 1 काशी की लोक कला और चित्रकारी वाराणसी के घाटों का एक जीवंत ऐक्रेलिक पेंटिंग जिसमें गंगा के तटों पर होने वाली दैनिक गतिविधियों को दिखाया गया है। इस पेंटिंग में लोग, नाव, मंदिरों की स्थापत्य शैली, और पक्षी दिख रहे हैं। यह काशी की लोक कला और सांस्कृतिक जीवन को दर्शाता है।

4. संगीत और नृत्य: बनारस घराना

बनारस का संगीत-परंपरा भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक विशिष्ट स्थान रखती है। बनारस घराना हिंदुस्तानी संगीत की सबसे प्रसिद्ध परंपरा है। इस घराने की विशेषता है—शक्तिशाली आवाज, गहन ताल-वाद्य, और जटिल संगीतात्मक प्रस्तुति। 16वीं सदी से, काशी के राजघरानों ने संगीत को अपने दरबार में प्रोत्साहित किया (मिश्रा, 2005)।

प्रसिद्ध बनारस के संगीतज्ञ:

- उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ (शहनाई, भारत रत्न)
- पंडित रविशंकर (सितार सम्राट)
- कथक सम्राट बिरजू महाराज (नृत्य)
- रामसहाय (तबला)

ये सभी कलाकार बनारस की राजदरबारी परंपरा से जुड़े थे।

5. कालीन बुनाई

भदोही-मिर्जापुर क्षेत्र (बनारस के निकट) कालीन बुनाई के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। मुगल सम्राट अकबर के समय में, ईरानी बुनकारों ने यहाँ अपनी परंपरा स्थापित की। भारत के कुल कालीन निर्यात का लगभग 75% भदोही से होता है। (भारतीय

राज-परिवार की भूमिका

1. मुगल काल में राज-संरक्षण

मुगल काल बनारस की लोक कला के लिए एक स्वर्ण-युग था। सम्राट अकबर के शासनकाल में (1556-1605), बनारस को साम्राज्य के सांस्कृतिक केंद्रों में से एक के रूप में स्वीकृति मिली। अकबर और उनके उत्तराधिकारी जहाँगीर ने व्यक्तिगत रूप से कलाकारों को प्रश्रय दिया और उनके कार्यों के लिए पुरस्कृत किया (सैफी, 2014)।

राज-संरक्षण के लाभ:

- आर्थिक समर्थन: कारीगरों को नियमित वेतन और आजीवन सहायता
- कलात्मक स्वतंत्रता: कलाकारों को अपनी परंपराओं के अनुसार काम करने की स्वतंत्रता
- सामाजिक सम्मान: दरबार में कलाकारों को उच्च स्थान और सम्मान
- ज्ञान का प्रसार: गुरु-शिष्य परंपरा के द्वारा ज्ञान का संप्रेषण

2. काशी नरेश राजवंश

मुगल काल के पश्चात्, विशेषकर 18वीं सदी में, काशी नरेश राजवंश बनारस की सांस्कृतिक परंपरा का मुख्य संरक्षक बन गया। रामनगर किला (जिसे अब काशी नरेश का आधिकारिक आवास माना जाता है) (त्रिपाठी, 2020) इसी राजवंश की स्थापत्य कला का प्रमाण है।

काशी नरेश का योगदान:

- संगीत, नृत्य और कला के लिए वार्षिक अनुदान
- कलाकारों को राजदरबार में नियुक्ति
- लोक नाटक और रामलीला का आयोजन (विश्व-प्रसिद्ध रामनगर रामलीला)
- धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रायोजन

काशी नरेश को आज भी शहर का धार्मिक नेतृत्व और सांस्कृतिक संरक्षक माना जाता है। वे सभी धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अभिन्न भूमिका निभाते हैं।

3. ब्रिटिश काल में रक्षा और संरक्षण

ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति के दौरान, भारतीय हस्तशिल्प को गहरा संकट का सामना करना पड़ा। मशीनी उत्पादन से प्रतिस्पर्धा के कारण बहुत सारे कारीगर बेरोजगार हो गए। लेकिन काशी नरेश राजवंश ने इस कठिन समय में परंपरागत कारीगरों को संरक्षण देना जारी रखा (गुप्ता, 2015)।

ब्रिटिश काल में राज-परिवार की भूमिका:

- परंपरागत कलाकारों को आर्थिक मदद
- हस्तशिल्प की परंपराओं को संरक्षित रखना
- अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भारतीय कला का प्रदर्शन

4. आधुनिक काल में निरंतरता

स्वतंत्रता के पश्चात्, भारत सरकार और काशी नरेश राजवंश दोनों ने मिलकर बनारस की लोक कला को संरक्षित रखने का प्रयास जारी रखा। आजकल, सरकारी अनुदान, राष्ट्रीय पुरस्कार, और अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति से कलाकारों को प्रोत्साहन मिल रहा है (भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड, 2021)।

रामनगर किला - राजपरिवार की विरासत



चित्र 2: वाराणसी स्थित रामनगर किले का मुख्य प्रवेश द्वार, जो इसके शाही महल की स्थापत्य कला और विरासत को प्रदर्शित करता है।

परिणाम और विश्लेषण

1. राज-संरक्षण के प्रभाव

अनुसंधान से स्पष्ट है कि राज-संरक्षण ने बनारस की कला परंपराओं के विकास, संरक्षण और वैश्विक विस्तार में निर्णायक भूमिका निभाई (सिल्कन सागा 2025)

सारणी 1: राज-संरक्षण के मुख्य प्रभाव

कला का क्षेत्र	मुगल काल में विकास	काशी नरेश काल में विकास	आधुनिक काल में स्थिति
बाराणसी साड़ी	अत्यधिक संरक्षण, फारसी प्रभाव	सतत संरक्षण	पुनः प्रसिद्ध
संगीत-नृत्य	दरबारी परंपरा का विकास	घराना परंपरा	अंतरराष्ट्रीय ख्याति
काष्ठ कला	पारंपरिक विकास	पारिवारिक परंपरा	सीमित किंतु जीवंत
चित्रकला	सांस्कृतिक प्रोत्साहन	लोक चित्रकारी फलफूल	आधुनिक गैलरियों में स्थान

2. आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

राज-संरक्षण के कारण:

- आर्थिक स्थिरता: कलाकारों को नियमित आय मिली जिससे उनका परिवार सुरक्षित रहा
- सामाजिक उत्थान: कलाकारों को समाज में सम्मानित स्थान मिला
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान हस्तांतरण: गुरु-शिष्य परंपरा मजबूत रही
- वैश्विक प्रसिद्धि: बनारस की कला को अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति मिली (सिंह, 2012)

3. सांस्कृतिक निरंतरता

राज-परिवार के संरक्षण से न केवल कला के रूप संरक्षित रहे, बल्कि उनके पीछे निहित आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का भी संरक्षण हुआ (मिश्रा, 2005)। बनारस की कला केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह धार्मिक विश्वास, सामाजिक परंपरा, और आध्यात्मिक आकांक्षा की अभिव्यक्ति है।

निष्कर्ष

बनारस (काशी) की लोक कला की समृद्ध परंपरा राज-परिवारों के सतत संरक्षण का एक उज्वल उदाहरण है। मुगल सम्राटों से लेकर काशी नरेश राजवंश तक, इन राज-परिवारों ने न केवल कलाकारों को आश्रय दिया, बल्कि कला के प्रति एक संवेदनशील दृष्टिकोण बनाए रखा। यह दृष्टिकोण ही बनारस को विश्व की सांस्कृतिक राजधानी बनाने में सफल रहा।

आज, जब परंपरागत कलाएँ आधुनिकता की चुनौतियों का सामना कर रही हैं, तब बनारस का अनुभव यह सिद्ध करता है कि सही संरक्षण और समर्थन से कला न केवल बचाई जा सकती है, बल्कि नए जीवन से भी भर सकती है। भविष्य में, सरकार, समाज, और राज-परिवारों को मिलकर इस महान विरासत को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने का दायित्व निभाना चाहिए।

आधुनिक भारत में, जहाँ वैश्वीकरण का दबाव है, बनारस की लोक कला एक प्रमाण है कि हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सँजोए रख सकते हैं और साथ ही विश्व-पटल पर अपनी पहचान बना सकते हैं। राज-परिवार की यह भूमिका न केवल ऐतिहासिक महत्व की है, बल्कि यह भविष्य के लिए भी एक मॉडल प्रदान करती है।

संदर्भ

1. मिश्रा, आर. के. (2005). *वाराणसी की सांस्कृतिक विरासत*. नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।
2. सिंह, वी. पी. (2012). *काशी का मिथक, इतिहास और संस्कृति*. वाराणसी: भारतीय संस्कृति परिषद।
3. त्रिपाठी, एस. (2020). *बनारस की कलाओं पर राज-संरक्षण की भूमिका*. भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 12(3), 45–59।
4. वर्मा, अ. (2018). *वाराणसी की पारंपरिक कलाएँ और शिल्प*. विरासत अध्ययन पत्रिका, 6(2), 87–102।
5. अलबीरूनी, ए. (2001). *भारत का इतिहास और संस्कृति*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
6. गुप्ता, आर. (2015). *भारतीय वस्त्र एवं हस्तशिल्प परंपरा*. दिल्ली: संस्कृति प्रकाशन।
7. भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड. (2021). *भारतीय कालीन उद्योग रिपोर्ट*. भारत सरकार, नई दिल्ली।
8. मिश्रा, आर. के. (2005). *वाराणसी की सांस्कृतिक विरासत*. नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।
9. सैफी, अ. (2014). *मुगल दरबार और भारतीय शिल्पकला*. लखनऊ: अवध सांस्कृतिक अकादमी।
10. सिंह, वी. पी. (2012). *काशी का मिथक, इतिहास और संस्कृति*. वाराणसी: भारतीय संस्कृति परिषद।
11. शर्मा, जे. (2019). *भारतीय लोक कला और समाज*. जयपुर: रावत पब्लिकेशंस।

12. त्रिपाठी, एस. (2020). *बनारस की कलाओं पर राज-संरक्षण की भूमिका*. भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 12(3), 45–59।
13. वर्मा, अ. (2018). *वाराणसी की पारंपरिक कलाएँ और शिल्प*. विरासत अध्ययन पत्रिका, 6(2), 87–102।
14. सिल्कन सागा (2025) बनारस की साड़ी: इतिहास, मूल और बुनाई की विरासत।